भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

कपास की खेती के लिए **XIII** (तेरहवीं) साप्ताहिक परामर्श, **15** से 21 अगस्त, **2023** तक

	वास्तविक वर्षा (मिमी)					अनुमानित वर्षा (मिमी)					परामर्श
	अगस्त					अगस्त					
दिनाँक	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**17**	**18**	**19**	**20**	**21**	
हरियाणा											
हिसार	0	0	0	0	0	3	0	6	5	0	हिसार में, 84 से 127 दिनों के पश्चात फसल फूल आने से लेकर गूलर विकास की अवस्था में होती है। सिंचाई एवं कीटनाशकों का छिड़काव किया गया। बारिश के बाद कुछ खेतों में घास-फूस फैल गया है। संभवता के अनुसार हाथ से निराई-गुड़ाई की गई। अधिकांश क्षेत्रों में थ्रिप्स की आबादी ईटीएल से नीचे थी, लेकिन जैसिड और सफेद मक्खी की आबादी कई क्षेत्रों में ईटीएल से ऊपर बढ़ रही है। कई कपास के खेतों में फूलों और हरे रंग के गूलर में ईटीएल से ऊपर गुलाबी सूँडी का संक्रमण देखा गया। अधिकांश खेतों में कपास की पत्ती मोड़ने वाली वायरल बीमारी, बोल सड़न और मायरोथेसियम/फंगल पत्ती धब्बा और पौधों का मुरझाना देखा गया। सिरसा में, फसल 92 से 115 दिन की है, जो कि फूल आने और गूलर बनने की अवस्था में है। कुल मिलाकर फसल अच्छी स्थिति में है। ऊँट और हाथ से कुदाल द्वारा अंतर-सांस्कृतिक कार्य, सिंचाई, उर्वरक और कीटनाशक का छिड़काव प्रगति पर हैं। अधिकांश स्थानों पर सफेद मक्खी और जैसिड की आबादी ईटीएल को पार कर गई है और सभी स्थानों पर जैसिड श्रेणी II-III की दर से वृद्धि देखी गई है, जबकि थ्रिप्स की आबादी में भारी गिरावट आई है। हरे गूलर की क्षति के आधार पर सभी स्थानों पर गुलाबी सूँडी के ईटीएल को पार करने से हरे गूलर की क्षति बढ़ने लगी है। कपास के खेतों में जड़ सड़न और बोल सड़न की घटनाएं देखी गईं।
जींद	0	0	0	0	0	0	0	6	5	0	
सिरसा	0	0	0	0	0	5	0	0	0	5	
रोहतक	0	0	0	0	0	4	0	4	6	0	

											परामर्श: हिसार में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे खरपतवार प्रबंधन करें और अपनी कपास की फसल की सिंचाई करें। 85 से 90 दिन पुरानी फसल में यूरिया की दूसरी खुराक 1 बैग (45 किग्रा)/एकड़ की दर से डालें। अधिक उपज प्राप्त करने के लिए फूल आने और गूलर बनने की अवस्था के दौरान 10 दिनों के अंतराल पर 13:00:45 @ 1% का पर्णीय छिड़काव करें। हल्की मिट्टी में उगाई जाने वाली फसल में जिंक की कमी को दूर करने के लिए यूरिया 2.0% और जिंक सल्फेट 21% @ 0.5% और मैग्नीशियम की कमी को दूर करने के लिए मैग्नीशियम सल्फेट 1 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें। हरियाणा में कपास की फसल में गुलाबी सूँडी की निगरानी और प्रबंधन के लिए यह महीना बहुत महत्वपूर्ण है। कपास की फसल में जहां फूल आना और गूलर बनना शुरू हो गया है, फूलों और गूलर में गुलाबी सूंडियों के हमले के प्रति सतर्क रहें और निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल लगाएं। यदि गुलाबी सूँडी के नर कीट, अगस्त के मध्य तक लगातार 3 दिनों तक 8 वयस्कों/जाल/दिन हो तो इसके प्रबंधन के लिए कीटनाशक हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। यदि गुलाबी सुंडी का संक्रमण 5-10% रोसेट फूलों या 5-10% संक्रमित हरी सुंडी के ईटीएल को पार कर जाता है, तो प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ या क्विनालफॉस 20 एएफ @ 400 मिली/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। । किसानों को सलाह दी जाती है कि वे गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए सिंथेटिक पाइरेथ्रोइड्स के संयोजन उत्पाद या टैंक मिश्रण का उपयोग न करें क्योंकि इससे सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़ रहा है। सफेद मक्खी और कपास पत्ती कर्ल वायरस रोग की प्रारंभिक आबादी को प्रबंधित करने के लिए नीम आधारित कीटनाशक @ 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी का उपयोग करें। जैसिड और सफेद मक्खी के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम/एकड़ या एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। सफेद मक्खी के गंभीर संक्रमण की स्थिति में, निम्फल आबादी को नियंत्रित करने

											के लिए पाइरिप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 500 मिलीलीटर या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी @ 240 मिलीलीटर/एकड़ को 200 लीटर पानी/एकड़ के अनुसार छिड़काव करें। मायरोथेसियम पत्ती धब्बा, कवक पत्ती धब्बा, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा और आर्द्र मौसमी बलाइट के लिए, कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्लूपी@0.3% या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम /लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55% + पायराक्लोस्ट्रोबिन 5% @20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का छिड़काव करें। कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्लूपी @30 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2%w/w + डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिराम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डब्लूजी @20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का पत्ते पर छिड़काव करके बोल सड़न का प्रबंधन करें। जड़ सड़न और विल्ट से प्रभावित क्षेत्रों के कपास के खेतों को कार्बेन्डाजिम 50% डब्लूपी @ 2 ग्राम/लीटर पानी से उपचार करें। कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्लूपी / डब्लूएस @ 2 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी @ 2 ग्राम/लीटर पानी का उपयोग करके बोल सड़न को नियंत्रित करें। खेतों में जमा पानी को बाहर निकालें। सिरसा में किसानों को अंतरकृषि क्रियाएँ जारी रखने का सुझाव दिया गया है। कीट प्रकोप की नियमित निगरानी करें। *16* से *31* अगस्त के बीच *30* से *40* किलोग्राम यूरिया/एकड़ की दर से नाइट्रोजन का एक भाग डालें। एन:पी:के (*13:0:45)* @ *2.0* किग्रा/*100* लीटर पानी का पत्तियों पर प्रयोग शुरू करें और *10* दिनों के अंतराल पर *2-3* बार दोहराएं। बीटी-कपास में अधिक उपज और पत्तियों के लाल होने के प्रबंधन के लिए पुष्प खिलने और गूलर विकास के चरणों के दौरान *15* दिनों के अंतराल पर *1* किलोग्राम मैग्नीशियम सल्फेट को *100* लीटर पानी में प्रति एकड़ में दो छिड़काव करें। जैसिड और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए डिनोटफ्यूरान

											20 एसजी @ *60* ग्राम या फ्लोनिकैमिड *50* डब्ल्यूजी @ *80* ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड *17.8* एसएल @ *60* मिली/एकड़ या एफिडोपाइरोपेन *50* जी/एल @ *400* मिली/एकड़ का छिड़काव करें। केवल सफेद मक्खी की वयस्क आबादी को प्रबंधित करने के लिए, डायफेंथियुरोन *50%* डब्लूपी *200* ग्राम को *150-200* लीटर पानी में डालें और एक सप्ताह के बाद, पाइरिप्रोक्सीफेन *10* ईसी @ *500* मिली या बुप्रोफेज़िन *25* एससी @ *400* मिली या स्पाइरोमेसिफेन *22.9* एससी @ *200* मिली / एकड़ *150* लीटर पानी में में निंफ को नियंत्रित करने के लिए डालें। सूटी फफूंद के मामले में, 15 दिनों के अंतराल पर प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @ 1 मिली/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्लूपी @ 2.5 ग्राम/लीटर पानी का रोगनिरोधी/चिकित्सीय छिड़काव करें। यदि गुलाबी सुंडी ट्रैप कैच या हरी गूलर क्षति के आधार पर ईटीएल को पार कर जाती है, तो इमामेक्टिन बेंजोएट 5एसजी @100 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @500 मिली या क्लोरपाइरीफोस 20% ईसी @500 मिली या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी 200 मिली/एकड़ 150 लीटर पानी में डालें एवं छिड़काव करें। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे गुलाबी इल्ली के प्रबंधन के लिए सिंथेटिक पाइरेथ्रोइड्स के संयोजन उत्पाद या टैंक मिश्रण का उपयोग न करें क्योंकि इससे सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़ रहा है। एक ही कीटनाशक को दोबारा न दोहराएं और जब भी दोहराव की आवश्यकता हो, कीटनाशक को बारी-बारी से प्रयोग करें। जड़ सड़न से प्रभावित पौधों और आसपास के स्वस्थ पौधों को कार्बेन्डाजिम 50% डब्लूपी @ 12 ग्राम/10 लीटर पानी या ट्राइकोडर्मा हर्ज़ियानम या टी विराइड डब्लूपी फॉर्मूलेशन @ 5-6 ग्राम/लीटर पानी से भिगोएँ। गूलर सड़न को प्रबंधित करने के लिए, कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्लूपी @ 2.5 ग्राम/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @1 मिलीलीटर/लीटर पानी का छिड़काव करें। पैराविल्ट प्रभावित पौधों को लक्षण दिखाई देने के तुरंत बाद 10 मिलीग्राम/लीटर की दर से कोबाल्ट क्लोराइड से भिगोएँ, इसके बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम + 10 ग्राम यूरिया/लीटर से भिगोएँ। कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्लूपी @3 ग्राम/लीटर या क्रेसॉक्सिम-मिथाइल 44.3% एससी @ 1 मिली/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @ 1 मिली/लीटर

											या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% एससी 1 मिली/लीटर या पायराक्लोस्ट्रोबिन 20% डब्ल्यूजी @1 मिली/लीटर या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 0.6 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करके पत्तियों पर फंगल धब्बों का प्रबंधन करें।
राजस्थान											
अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, फसल 49 से 95 दिन के पश्चात वानस्पतिक अवस्था से फूल आने तक की होती है, । खेतों में घास और चौड़ी पत्ती वाले दोनों तरह के खरपतवार फैल गए हैं। जैसिड को छोड़कर कीट और बीमारियों का कोई प्रकोप नहीं, लेकिन वो भी ईटीएल से नीचे है। श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, फसल 70 से 125 दिन पुरानी है तथा वानस्पतिक, शाखाबद्ध, स्कवेर गठन और फूल लगने की अवस्था में है। अगेती और समय पर बोई गई कपास में अंतरकृषि क्रियाएँ अपनाई गई हैं। पंक्ति स्थानों से खरपतवार हटाने के लिए हाथ से निराई और गुड़ाई की गई है। जैसिड की घटनाएं 0 से 2.33/पत्तियां, सफेद मक्खी 0 से 3/पत्तियां और थ्रिप्स की संख्या 0 से 5.67/पत्तियां देखी गईं। कपास के खेतों में 0-5% पीडीआई की सीमा में सीएलसीयूडी लक्षण देखे गए। सलाह: दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में किसानों को फसल अवस्था के अनुसार □□□□ उर्वरकों की अनुशंसित खुराक का दूसरा भाग □□□□□ की सलाह दी जाती है। रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण की निगरानी करें और यदि यह ईटीएल को पार कर जाता है तो इसे नियंत्रित करने के लिए 5% नीम बीज गिरी अर्क (एनएसकेई) या एजाडिरेक्टिन 0.15% ईसी @ 5 मिली/लीटर पानी या बुप्रोफेज़िन 25 एससी @ 1.25 लीटर/हेक्टेयर या डायफेनथियुरोन 50 डब्ल्यूपी @ 625 ग्राम/हेक्टेयर या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी 200 ग्राम/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड की निगरानी के
जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
नागौर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	

											लिए 8 प्रति एकड़ की दर से पीले चिपचिपे जाल लगाएं और गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए 2 प्रति एकड़ की दर से फेरोमोन जाल लगाएं। एक ही कीटनाशक और एक ही समूह के कीटनाशकों को दोबारा न दोहराएं। दो या अधिक कीटनाशकों के टैंक मिश्रण से बचें। श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को सिफारिश के अनुसार नाइट्रोजन उर्वरकों की खुराक लगाने की सलाह दी जाती है। सिंचाई से ठीक पहले नत्र के प्रयोग से बचें क्योंकि इससे उर्वरकों का रिसाव होता है और परिणामस्वरूप, भूजल प्रदूषित होता है। जहां फसल 65 दिन से ऊपर है, वहां पॉटेश्यम नाइट्रेट @ 2% का पत्ते पर प्रयोग करें। कपास के खेतों के आस-पास से खरपतवार हटा दें। कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। फसल की प्रारंभिक अवस्था में रस चूसने वाले कीटों और गुलाबी सूँडी के कम आक्रमण की स्थिति में नीम आधारित कीटनाशकों का 5 मिलीलीटर प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें। जैसिड को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें।. थ्रिप्स संक्रमण के मामले में, स्पिनेटोरम 11.7 एससी @ 0.8 मिली/लीटर या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @3 मिली/लीटर पानी का उपयोग करें। गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। . जहां भी गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर जाती है, यानी फूल या गूलर का संक्रमण 5% से अधिक है, प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 30 मिलीलीटर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 5 ग्राम/10 लीटर पानी या इंडोक्साकार्ब 14.5% एससी @ 1.0 मिलीलीटर/लीटर पानी का छिड़काव करें।
मध्य प्रदेश											
खरगाँव											खंडवा में, फसल **49** से **98** दिन के बाद वानस्पतिक, फूल आने से पहले, फूल आने और गूलर बनने की अवस्था में की होती है। फसल की अवस्थाओं के अनुसार निराई-गुड़ाई, अंतरकृषि संचालन, उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग किया गया है।
धार	2.1	0.3	10.3	0.3	0	3	4	6	6	6	
खांडवा											

											उन सभी क्षेत्रों में लंबे समय तक सूखा रहा, जहां फसल फूल आने या फूल आने के बाद की अवस्था में है। यदि संभव हो खेत की सिंचाई करें। कुछ खेतों में जैसिड और बैक्टीरियल ब्लाइट का प्रकोप देखा गया है। सलाह किसानों को सलाह दी जाती है कि वे उर्वरक की दूसरी और तीसरी खुराक 25% एन और 50% पी और पोटाश के साथ 60 दिन पर और 25% नत्र बुआई के 90 दिन बाद लगाएं। रस चूसने वाले कीटों की जांच करने और गुलाबी सूँडी द्वारा अंडे देने से रोकने के लिए फसल के 45-60 दिनों पर नीम आधारित कीटनाशकों का 1 लीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। उन क्षेत्रों में जहां घटना ईटीएल (2 निम्फ / पत्ती) से ऊपर है, फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 200 ग्राम/हेक्टेयर या डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 150 ग्राम/हेक्टेयर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल @ 150 मिली/हेक्टेयर का छिड़काव करें। गुलाबी सूँडी कीट गतिविधि की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें। रोसेट फूलों की उपस्थिति का निरीक्षण करें और उन्हें इकट्ठा करके तुरंत नष्ट कर दें। बैक्टीरियल ब्लाइट रोग के प्रबंधन के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्लूपी / डब्लूजी@ 25-30 ग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करें। यदि खेतों में अचानक सूखने के लक्षण दिखाई दें, तो प्रभावित पौधों के चारों ओर तुरंत 1.5% यूरिया डालें।

वर्षा (मिमी) पौराणिक रंग

<5	5-20	21-50	51-80	>80

0.0 मिमी वर्षा (कोई वर्षा नहीं)
रिक्त स्थान बताता है कि आंकड़े उपलब्ध नहीं है।
स्रोत: www.imdagrimet.gov.in
www.agromet.imd.gov.in

फसलकाल के बाद और बुआई से पहले की प्रथाओं का विवरण

1. पिछले फसल मौसम के बचे हुए डंठलों और आंशिक रूप से खुले हुए गूलरों को खेतों से हटा दे। उखाड़े गए कपास के डंठलों को खेत की मेड़ों पर न रखें। फसल के मौसम के अंत में, पिछली पीढ़ी के गुलाबी सूँडी फसल के अवशेषों जैसे कि संक्रमित गूलर, डंठल या मिट्टी में

सुसुप्तावस्था में चले जाते हैं। इसलिए, गुलाबी सूँडी के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए ऐसे संक्रमित अवशेषों को तुरंत नष्ट कर देना चाहिए। अवशेषों के नष्ट होने से जीवाणु पत्ती झुलसा, जड़ सड़न और फंगल पत्ती धब्बे जैसी बीमारियों से नए मौसम की कपास की फसल में संक्रमण को कम करने में भी मदद मिलेगी।

2. फसलकाल के बाद यदि कोई कीट या आत्मघाती पतंगे रह गए हो तो उनको फंसाने के लिए मार्केट यार्ड और जिनिंग मिलों के परिसर में 20 मीटर की दूरी पर कम से कम 10 फेरोमोन जाल स्थापित करें। फेरोमोन ट्रेप में ल्यूर समय पर बदलें। क्षतिग्रस्त बीजों से निकलने वाले लार्वा को भी नष्ट कर दे। इससे जिनिंग या मार्केट यार्ड परिसर से आस-पास के खेतों तक गुलाबी बॉलवर्म के संक्रमण को फैलने से रोकने में मदद मिलेगी।
3. कपास की फसल की मानसून के पूर्व बुआई से बचें। जल्दी बोई गई फसल में स्कवेर और फूल जैसी प्रजनन संरचनाएं जल्दी आ जाती हैं। पिछले सीज़न की निष्क्रिय/सुस्प्त आबादी से निकलने वाले गुलाबी सूँडी इन स्कवेर और फूलों पर अंडे देते हैं, इस प्रकार जल्दी बोई गई फसल नए फसलकाल में गुलाबी सूँडी की पहली पीढ़ी को पूरा करने में मदद करती है। यदि समय पर नियंत्रित नहीं किया गया, तो इस आबादी की अगली पीढ़ियां समय पर बोई गई कपास की फसल पर लगे हुए स्कवेर, फूल और गूलर की शुरुआत के साथ ही फैलने लगती हैं।
4. गर्मियों के दिनों में गहरी जुताई करने से, अप्रैल-मई में सूरज की चिलचिलाती गर्मी के कारण मिट्टी में छिपे सुप्त लार्वा और प्यूपा को बाहर निकल जाते है और गर्मी से मर जाते है। इसके अलावा, जुते हुए खेतों का अनुसरण करने वाले पक्षी कीड़ों के इन जीवन चरणों का शिकार करते हैं। इससे आने वाले मौसम में कपास की फसल पर गुलाबी सूँडी, पत्ती खाने वाले सूँडी, मिट्टी जनित बीमारियों जैसे विल्ट, जड़ सड़न और नेमाटोड को कम करने में मदद मिलती है।
5. गुलाबी सूँडी के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए पिछले फसलकाल के दौरान जिन खेतों में गुलाबी सूँडी का अत्यधिक प्रकोप था, वहां फसल चक्र अपनाना चाहिए। कपास गुलाबी सूँडी का एकमात्र भोजन है, इसलिए फसल चक्र इस कीट के जीवन चक्र को तोड़ने में मदद करता है। रोगग्रस्त खेतों में मृदा जनित रोगों और सूत्रकृमि के संक्रमण को रोकने में फसल चक्र बहुत प्रभावी है।
6. कपास की रस चूसने वाली कीट और रोग प्रतिरोधी, कम अवधि वाली और जल्दी पकने वाली किस्में/संकर उगाएं। इससे फसल के शुरुआती विकास चरण के दौरान रस चूसने वाले कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों के अवांछित छिड़काव से बचने में मदद मिलती है। गुलाबी सूँडी का संक्रमण फसलकाल के मध्य से शुरू होता है और फसलकाल के अंत तक लगातार बढ़ता है। इसलिए, कम अवधि और जल्दी पकने वाली किस्में देर के मौसम में गुलाबी सूँडी के संक्रमण से बचने में मदद करती हैं।
7. कपास की फसल की बुआई जून माह में 80-100 मिमी मानसूनी वर्षा होने पर ही करनी चाहिए। उचित अंकुरण और अच्छी फसल को सुनिश्चित करने के लिए, शुरुआती अंकुर चरण के दौरान लंबे समय तक शुष्क अवधि का सामना करने के लिए, मिट्टी में इष्टतम नमी

होनी चाहिए। इससे वर्षा के लंबे समय तक न होने एवं मौसम शुष्क रहने के कारण दोबारा बुआई से बचने में भी मदद मिलती है। जून में समय पर बुआई करने से गुलाबी सुंडी के शुरुआती संक्रमण से बचने में मदद मिलती है।

8. गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) रणनीति के कार्यान्वयन के संबंध में कपास किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए। दुकानदारों को यह भी सलाह दी जा सकती है कि वे किसानों को मानसून के पूर्व बुआई न करने के लिए सूचित करें। इससे किसानों तक सही संदेश अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचाने में मदद मिलेगी।

कपास उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों के प्रबंधन, कीटों और बीमारियों आदि को भाकृअनुप- केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एक एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकती है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप- केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके।